IIM JAMMU
सा विद्या या विमुक्तये
10 Years
CELEBRATING THE 10th YEAR OF EXCELLENCE

EFMD ACCREDITED | MBA
BUSINESS GRADUATES ASSOCIATION ACCREDITED

भारतीय प्रबंधन संस्थान जम्मू
Indian Institute of Management Jammu

हिंदी पत्रिका

त्रिकुटा

आत्मदीप: भव

त्रि कु टा

संपादकीय समिति (भारतीय प्रबंधन संस्थान जम्मू)
प्रो. श्याम नारायण लाल, अध्यक्ष मीडिया एवं प्रकाशन
डॉ. अनुजा अखौरी, उपाध्यक्ष, हिंदी कार्यव्यान समिति
शालिन एस. नायर, प्रशासनिक अधिकारी जन-सम्पर्क एवं प्रशासन
डॉ. आशीष कु. ईशर, राजभाषा अधिकारी

संकलन समिति
अभिनव पाण्डेय, एमबीए (एच ए एंड एच एम), द्वितीय वर्ष

प्रतिलिप्यधिकार
भारतीय प्रबंधन संस्थान जम्मू
सर्वाधिकार सुरक्षित
इस पुस्तक की किसी भी सामग्री, कविता, लेख, आलेख आदि को कॉपीराइट स्वामी की बिना लिखित अनुमति के किसी भी रूप में जैसे फोटोस्टेट, माइक्रोफिल्म, जेटोग्राफी या अन्य किसी रूप में किसी भी सूचना पुनर्प्राप्ति प्रणाली, इलेक्ट्रॉनिक या मेकैनिकल रूप में शामिल कर पुनरुत्पादित नहीं किया जा सकता है।

मूल रूप से भारत में प्रकाशित
पुस्तक : पत्रिका

© भारतीय प्रबंधन संस्थान जम्मू
संस्करण: पंचम
वर्ष: 2025

प्रकाशक: भारतीय प्रबंधन संस्थान जम्मू

पुस्तक डिजाइन एवं मुद्रकः
सिग्रस एडवरटाइजिंग (इंडिया) प्रा. लि.
बंगाल इको इंटेलिजेंट पार्क, टावर-१, १३वां तल, यूनिट २९, ब्लॉक ईएम-३, सेक्टर-V
साल्टलेक, कोलकाता, पश्चिम बंगाल ७०००९१

सम्पादकीय

त्रिकुटा
“आत्मदीपः भव”

हमारे संस्थान की हिन्दी पत्रिका 'त्रिकुटा ' की पांचवां संस्करण को प्रस्तुत करते हुए हमें अपार हर्ष की अनुभूति हो रही है।

पत्रिका के नाम के चयन के लिए संस्थान के सभी सदस्यों से सुझाव आमंत्रित किए गए थे। कुल 50 प्रविष्टियाँ प्राप्त हुईं, जिनमें से श्री आशीष कुमार इशर द्वारा सुझाए गए “त्रिकुटा” नाम और टैगलाइन “आत्मदीपः भव” का चयन किया गया। त्रिकुटा पर्वत भारत के जम्मू और कश्मीर राज्य में स्थित है। यह हिमालय पर्वत श्रृंखला का हिस्सा है और पीर पंजाल रेंज से शिवालिक पहाड़ियों तक फैला हुआ है। कैलाश (6,697 मीटर), शिवलिंग (6,590 मीटर), और मेरु (6,481 मीटर) त्रिकुटा पर्वत की तीन प्रमुख चोटियाँ हैं। पहाड़ ग्लेशियरों का घर हैं, जिसमें मंदाकिनी नदी के स्रोत चोराबारी ग्लेशियर शामिल हैं। त्रिकुटा ब्रह्मा के घर महा मेरु (मेरु पर्वत) के आसपास के बीस पहाड़ों में से एक है। पहाड़ को दिव्य देवी दुर्गा का दसरा घर माना जाता है। वह बुराई को समाप्त करने के लिए तीन देवियों की शक्ति से बनाई गई थी; इसलिए पर्वत को त्रिकुटा कहा जाता है। भारतीय प्रबंधन संस्थान जम्मू परिसर त्रिकुटा पहाड़ों की तलहटी में स्थित है। त्रिकुटा पहाड़ों की ऊंचाई भारतीय प्रबंधन संस्थान जम्मू की दृष्टि का प्रतिनिधित्व करती है जो प्रबंधकों और उद्यमियों को विकसित करने की ओर सदैव अग्रसर है। पत्रिका की टैगलाइन 'आत्मदीपः भव' का अर्थ है स्वयं अपना प्रकाश बनना।

हम अपने संस्थान के निदेशक प्रो. (डा.) बी. एस. सहाय जी को सहृदय धन्यवाद देते हैं, जिनके बहुमूल्य सुझाव से पत्रिका का पांचवां अंक अभिरूपित हो पाया है। साथ ही हम उन सभी को सविनय आभार व्यक्त करते है जिन्होंने कविता, लेख, कहानी तथा चित्र द्वारा अपने विचारों को पत्रिका के पहले संस्करण में साझा किया है।

यद्यपि पत्रिका के प्रकाशन में हमनें सतर्क ता बरती है, फिर भी अगर कोई त्रुटि रह गयी हो तो हमें खेद है। आपसे अनुरोध है की पत्रिका को और बेहतर बना सके इसके लिए आप अपने सुझाव पाठक और आलोचक, दोनों प्रारूप में हमसे साझा करें (hindipatrika@iimj.ac.in)।

साधुवाद।
सम्पादकीय समिति
भारतीय प्रबंधन संस्थान जम्मू

अनुक्रमणिका

निदेशक का संदेश	3
◆ **राष्ट्रनिर्माण का शतक : महाराजा हरि सिंह का योगदान- *प्रो० श्याम नारायण लाल*,** *वरिष्ठ परामर्शदाता, भारतीय प्रबंधन संस्थान, जम्मू*	4
◆ **ओम पुरी: संघर्ष, कला और दुर्लभ मानवीय ऊष्मा से तराशा गया जीवन- *शलिन सशिधरन नायर*,** *प्रशासनिक अधिकारी, जनसंपर्क एवं प्रशासन*	6
◆ **बचपन की वो गलियाँ- *डॉ रश्मि रंजन परिदा*,** *सह-प्राध्यापक*	8
◆ **भारतीय प्रबंधन संस्थान जम्मू- भारत का गौरव, जम्मू की पहचान- *शलिन सशिधरन नायर*,** *प्रशासनिक अधिकारी, जनसंपर्क एवं प्रशासन*	9
◆ **कर्तव्य पथ पर- *ई० मो० हसीन*,** *कनिष्ठ अभियंता (सिविल), परियोजना विभाग*	10
◆ **एक छोटी सी कहानी- *आशीष कुमार*,** *पीएचडी डब्ल्यूपी 25003*	11
◆ **माँ- *मानसी गुप्ता*,** *एमबीए 24147*	12
◆ **वह नीला कागज- *अंकुश अग्रवाल*,** *ईएमबीए छात्र 25006*	13
◆ **बेज़ुबान- *सुमिता प्रधान*,** *आईपीएम 24123*	14
◆ **मेरा मौन गुरु- *पर्युल भावसार*,** *आईपीएम 24083*	15
◆ **यह तुम्हारी बाज़ी है!- *अभिषेक गौरव*,** *एम.बी.ए. (हेल्थकेयर मैनेजमेंट) 25002*	16
◆ **उस तिरंगे की हिफाजत तुम्हारे जीवन का बहुमूल्य लक्ष्य- *ऋषिका अनुराग अग्रवाल*,** *एम.बी.ए. 25024*	17
◆ **दास्तान-ए-IIM- *अभिनव पांडे*,** *एचएएचएम 24003*	18
◆ **तिरंगे की सौगंध- *शिवम सोनी*,** *एम.बी.ए. (हेल्थकेयर मैनेजमेंट) 25075*	19
◆ **मैं गुरु हूँ- *शाश्वत त्रिपाठी*,** *एम.बी.ए. 25246*	20
◆ **नई सुबह की तलाश- *अभिषेक कुमार*,** *एमबीएएचसी 25003*	21
◆ **त्रिकुट पर विराजी महाशक्ति - श्री माता वैष्णो देवी- *डॉ. आशीष ईशर*,** *कार्यकारी (प्रशासन)*	22
◆ **जीवनधारा: जल की महिमा- *श्री विजय अनंत कांबले*,** *प्रशासनिक अधिकारी परियोजना और संपदा*	23

निदेशक का संदेश

प्रो. विद्या शंकर सहाय
निदेशक

भारतीय प्रबंधन संस्थान जम्मू, जिसे 2016 में भारत सरकार के शिक्षा मंत्रालय द्वारा स्थापित किया गया था, इस वर्ष अपनी स्थापना के दसवें वर्ष का जश्न मना रहा है और सफलतापूर्वक नौ गौरवशाली वर्ष पूरे कर चुका है। भारत के सबसे युवा आईआईएम में से एक होते हुए भी, भारतीय प्रबंधन संस्थान जम्मू ने अपने अनुसंधान, नवाचार, और परामर्श पर केंद्रित दृष्टिकोण के माध्यम से एक प्रमुख व्यावसायिक संस्थान बनने की दिशा में तेजी से प्रगति की है।

भारतीय प्रबंधन संस्थान जम्मूअब लगभग 1200 छात्रों की संख्या पर पहुँच गया है और विभिन्न कार्यक्रम प्रदान करता है, जिनमें एमबीए, आईपीएम, पीएचडी (पूर्णकालिक), पीएचडी (कार्यरत पेशेवरों के लिए), ईएमबीए, और अल्पकालिक प्रमाणन पाठ्यक्रम शामिल हैं। इन कार्यक्रमों के माध्यम से, संस्थान उन नेताओं का निर्माण कर रहा है जो वैश्विक व्यवसाय की जटिलताओं को समझते हैं।

इस यात्रा में एक ऐतिहासिक उपलब्धि के रूप में, भारतीय प्रबंधन संस्थान (IIM) जम्मू ने अपने प्रमुख एमबीए कार्यक्रम के लिए दो प्रतिष्ठित अंतरराष्ट्रीय मान्यताएँ — BGA और EFMD — प्राप्त की हैं। इसके साथ ही, आईआईएम जम्मू देश के केवल पाँच आईआईएम में शामिल हो गया है और एकमात्र दूसरा और तीसरी पीढ़ी का आईआईएम है जिसने यह उपलब्धि हासिल की है। यह उपलब्धि वैश्विक उच्च शिक्षा परिदृश्य में आईआईएम जम्मू के तीव्र उदय को रेखांकित करती है।

भारत के माननीय प्रधानमंत्री के "विकसित भारत" दृष्टिकोण के अनुरूप, आईआईएम जम्मू विकास और उन्नति को प्रोत्साहित करने के लिए समर्पित है। संस्थान ने उद्यमिता और कौशल संवर्धन को बढ़ावा देने के लिए Centre for Innovation and Transformation in Governance (CITaG) तथा Foundation for Entrepreneurship Innovation & Skill Development (FEISD) जैसे महत्वपूर्ण केंद्र स्थापित किए हैं। ये केंद्र नवाचारी विचारों को पोषित करने और भविष्य के प्रबंधकों को VUCA (वोलेटाइल, अनिश्चित, जटिल, और अस्पष्ट) व्यावसायिक दुनिया में सफलता पूर्वक नेविगेट करने के लिए आवश्यक कौशल से लैस करने का लक्ष्य रखते हैं।

"The future belongs to those who learn, unlearn, and relearn." – Alvin Toffler

भारतीय प्रबंधन संस्थान जम्मू के सिद्धांत छात्रों को परिवर्तन को अवसर के रूप में देखने और नवाचार को अपनाने की प्रेरणा देती हैं।

संस्थान की नालंदा लाइब्रेरी विश्वस्तरीय अवसंरचना और आधुनिक तकनीक से सुसज्जित है। यह पुस्तकालय न केवल छात्रों और शोधकर्ताओं के लिए ज्ञान का भंडार है, बल्कि एक ऐसा वातावरण भी प्रदान करता है जो सीखने और नवाचार को प्रोत्साहित करता है।

लगातार दूसरी बार, भारतीय प्रबंधन संस्थान जम्मूको टाउन ऑफिशियल लैंग्वेज इम्प्लीमेंटेशन कमिटी, जम्मू द्वारा भारत सरकार की राजभाषा नीति के अनुपालन में उत्कृष्ट प्रदर्शन के लिए उनकी द्विवार्षिक बैठक के दौरान सम्मानित किया गया। यह प्रतिष्ठित सम्मान भारतीय प्रबंधन संस्थान जम्मू की हिंदी को राजभाषा के रूप में बढ़ावा देने और इसे प्रशासनिक और शैक्षणिक कार्यों में प्रभावी ढंग से शामिल करने की प्रतिबद्धता को रेखांकित करता है।

इस प्रयास को और अधिक प्रभावशाली बनाने के लिए, भारतीय प्रबंधन संस्थान जम्मू की हिंदी समिति ने इस वर्ष संस्थान की हिंदी पत्रिका का पांचवां प्रकाशन किया। यह पत्रिका न केवल हिंदी भाषा और साहित्य को प्रोत्साहन देती है, बल्कि छात्रों और कर्मचारियों को अपनी रचनात्मकता व्यक्त करने का एक मंच भी प्रदान करती है।

राष्ट्रनिर्माण का शतक : महाराजा हरि सिंह का योगदान

प्रो० श्याम नारायण लाल
वरिष्ठ परामर्शदाता, भारतीय प्रबंधन संस्थान, जम्मू

23 सितम्बर 2025 भारत के इतिहास का एक स्मरणीय क्षण होगा। यह वह दिन है जब जम्मू के अमर महल में जन्मे महाराजा हरि सिंह के गद्दी संभालने के सौ वर्ष पूरे होंगे। यह केवल एक तिथि नहीं, बल्कि आत्ममंथन और गर्व का अवसर है। एक शताब्दी बीत जाने के बाद भी हरि सिंह का नाम न्याय, सुधार और राष्ट्रनिर्माण की गाथा के रूप में याद किया जाता है। वे केवल जम्मू-कश्मीर के शासक नहीं थे, बल्कि भारतीय इतिहास के उस निर्णायक मोड़ के नायक थे, जिनकी दूरदृष्टि और साहस ने सम्पूर्ण भारत के भूगोल और पहचान को आकार दिया।

उनके भारत से विलय के लिए किए गए ऐतिहासिक हस्ताक्षर ने केवल एक दस्तावेज़ पर की गई औपचारिकता को पूरा नहीं किया, बल्कि उस स्वप्न को साकार किया जिसे पीढ़ियों तक लोग एक कहावत के रूप में दोहराते आए थे—“कश्मीर से कन्याकुमारी तक।” यह वाक्य उनके निर्णय से एक ठोस यथार्थ में बदल गया। उसी क्षण भारत का मानचित्र पूर्ण हुआ और उसकी एकता सजीव हो उठी। यह हस्ताक्षर उस पुल के समान था जिसने उत्तर की बर्फ़ीली चोटियों को दक्षिण के सागर तट से, और विविध भाषाओं, संस्कृतियों व धर्मों को एक सूत्र में बाँध दिया।

सन 1895 में जब उनका जन्म हुआ, तब डोगरा राजवंश अपनी प्रतिष्ठा और कठिन ज़िम्मेदारियों दोनों के साथ खड़ा था। महाराजा गुलाब सिंह ने जिस राज्य की नींव डाली थी, रणबीर सिंह और प्रताप सिंह ने शिक्षा, प्रशासन और न्याय व्यवस्था में सुधार कर उसकी मज़बूत नींव रखी थी। अमर सिंह, जिनके पुत्र हरि सिंह थे, स्वयं सामाजिक और राजनीतिक दृष्टि से जागरूक थे। यह सब विरासत हरि सिंह को मिली। बचपन से ही उन्होंने अनुशासन, आधुनिक शिक्षा और परंपरागत संस्कारों का संतुलन पाया। यही संतुलन आगे चलकर उनके शासन का आधार बना।

23 सितम्बर 1925 को जब उन्होंने गद्दी संभाली, तब समय सरल नहीं था। चारों ओर राजनीतिक षड्यंत्र, सामाजिक असमानताएँ और औपनिवेशिक हस्तक्षेप मौजूद थे। ऐसी कठिन परिस्थितियों में उनका उद्घोष आज भी इतिहास में गूँजता है—“मेरा कोई धर्म नहीं, मेरा धर्म न्याय है।” यह केवल एक कथन नहीं था, बल्कि उनके शासन का दर्शन था। धर्म, जाति और वर्ग की खाइयों से विभाजित समाज में न्याय को सर्वोपरि बताना उस समय क्रांतिकारी विचार था।

उनका यह दृष्टिकोण केवल आदर्श वाक्य नहीं रहा। गद्दी संभालते ही उन्होंने ग्यारह सूत्रीय सुधार कार्यक्रम लागू किया। इसमें शिक्षा का विस्तार, स्त्रियों की शिक्षा को बढ़ावा, अस्पतालों और औषधालयों की स्थापना, सिंचाई परियोजनाएँ, किसानों के लिए भूमि सुधार, और जंगलों को आम लोगों के लिए उपलब्ध कराना शामिल था। ये कदम महज़ दिखावे के नहीं थे, बल्कि समाज की बुनियादी संरचना को बदलने वाले थे। हरि सिंह का यह प्रयत्न उस समय बहुत दूरदर्शी था, क्योंकि यह वही दिशा थी जिसे आगे चलकर स्वतंत्र भारत का संविधान अपनाने वाला था—समानता, सामाजिक न्याय और राज्य की ज़िम्मेदारी।

सन 1921–22 के अकाल में हरि सिंह की करुणा और प्रशासनिक क्षमता स्पष्ट दिखाई दी थी। उन्होंने स्वयं राहत कार्यों का नेतृत्व किया और जनता को भूखमरी से बचाया। यह अनुभव उनके भीतर लोककल्याण की चेतना को और गहरा कर गया। शासन का अर्थ उनके लिए केवल सत्ता नहीं था, बल्कि प्रजा के दुःख-सुख में भागीदारी था।

उनकी दृष्टि केवल जम्मू-कश्मीर तक सीमित नहीं रही। वे भारत की व्यापक जागृति के सहभागी भी थे। इसका प्रमाण 1930–31 में लंदन की गोलमेज सभा में मिला। जब अधिकांश रियासतों के शासक अपने-अपने विशेषाधिकारों पर बल दे रहे थे, तब हरि सिंह ने निर्भीक स्वर में कहा—“हम भारतीय हैं और अपने देश की इज़्ज़त और बराबरी के हक़ के लिए कंधे से कंधा मिलाकर खड़े हैं।” यह केवल शब्द नहीं थे, बल्कि साम्राज्यवाद को चुनौती थी। इसमें वही भावना झलकती है जिसे गुरुदेव टैगोर ने व्यक्त किया था—“जहाँ भय रहित मन और ऊँचा मस्तक हो।” हरि सिंह की वाणी में इसी निर्भीक चेतना की गूँज थी।

लेकिन 1940 का दशक और भी कठिन था। स्वतंत्रता समीप थी, परंतु विभाजन का भय और हिंसा चारों ओर फैल रही थी। अगस्त 1947 में जब भारत आज़ाद हुआ, तो जम्मू-कश्मीर का भविष्य अधर में था। पाकिस्तान ने लालच और दबाव दोनों साधनों का प्रयोग किया और कबायली हमलावरों को भेजकर राज्य पर कब्ज़ा करने की कोशिश की। श्रीनगर तक संकट पहुँच गया था। इसी निर्णायक घड़ी में महाराजा हरि सिंह ने 26 अक्तूबर 1947 को भारत के साथ विलय पत्र पर हस्ताक्षर किए। यह एक ऐसा क्षण था जिसने भारत की भौगोलिक अखंडता को स्थायी रूप दिया।

उनके उस हस्ताक्षर ने केवल कश्मीर को भारत का हिस्सा नहीं बनाया, बल्कि सम्पूर्ण राष्ट्र को एक सूत्र में बाँध दिया। यही वह क्षण था जब “कश्मीर से कन्याकुमारी तक” का नारा वास्तविकता बना। यह निर्णय केवल राजनीति का नहीं था, बल्कि सभ्यता का चुनाव था। हरि सिंह ने बहुलता, लोकतंत्र और न्याय की राह को चुना और संकीर्ण मज़हबी राष्ट्रवाद को अस्वीकार किया। महात्मा गाँधी ने कहा था—“भारत की एकता थोपी हुई नहीं है, यह हृदय की एकता है।” हरि सिंह ने इस हृदयगत एकता को मूर्त रूप दिया।

विडंबना यह है कि इतने महान योगदान के बावजूद औपनिवेशिक इतिहासकारों और बाद की राजनीति ने उनकी छवि को अक्सर धुंधला कर दिया। उन्हें संकटों में उलझा राजा बताया गया। लेकिन सच्चाई यह है कि वे सुधारक थे, दूरदर्शी थे और निर्णायक क्षण में राष्ट्रनिर्माता थे। उनकी शिक्षा और स्वास्थ्य नीति, भूमि सुधार और जनकल्याणकारी योजनाएँ आज भी आधुनिक भारत के लिए प्रेरणा हैं।

आज जब हम उनके गद्दी संभालने की शताब्दी मना रहे हैं, यह अवसर केवल श्रद्धांजलि का नहीं है, बल्कि इतिहास को सही दृष्टि से देखने का है। हमें यह मानना होगा कि भारत का निर्माण केवल महानगरों के नेताओं ने नहीं किया, बल्कि रियासतों और उनके शासकों की भूमिका भी उतनी ही महत्वपूर्ण थी। जम्मू-कश्मीर, जिसे अक्सर विवादों से जोड़ा जाता है, दरअसल भारत की एकता और अखंडता का प्रतीक है।

इस अवसर पर हमें याद करना चाहिए कि वही राजकुमार जिसने अकाल में जनता की मदद की, वही शासक जिसने न्याय को अपना धर्म कहा, वही सुधारक जिसने शिक्षा और खेती को नई दिशा दी, वही नेता जिसने लंदन में भारत की आवाज़ बुलंद की, और वही राष्ट्रनिर्माता जिसने एक हस्ताक्षर से भारत की एकता को सुनिश्चित किया। उनकी गाथा केवल जम्मू-कश्मीर की नहीं, बल्कि पूरे भारत की गाथा है—हिम्मत, न्याय और राष्ट्रनिर्माण की गाथा।

कवि इक़बाल की पंक्तियाँ—“सारे जहाँ से अच्छा हिन्दोस्ताँ हमारा”—आज भी उतनी ही सजीव हैं। उस “हमारा” में जम्मू-कश्मीर भी उतना ही शामिल है जितना देश का कोई और कोना। हरि सिंह का निर्णय इसी “हमारा” को साकार करता है।

इस शताब्दी वर्ष में जब हम महाराजा हरि सिंह की विरासत को स्मरण करते हैं तो यह केवल अतीत का सम्मान भर नहीं है, यह भविष्य का मार्गदर्शन भी है। यह हमें याद दिलाता है कि राष्ट्र की शक्ति केवल हथियारों से नहीं, बल्कि न्याय, करुणा और साहस से बनती है। हमें यह सीख मिलती है कि किसी भी शासक की असली पहचान उसकी प्रजा के दुःख-दर्द में भागीदारी और उसके लिए किए गए सुधारों में होती है। हरि सिंह ने यह दिखाया कि सत्ता तभी सार्थक है जब वह न्याय और समानता का साधन बने।

ओम पुरी: संघर्ष, कला और दुर्लभ मानवीय ऊष्मा से तराशा गया जीवन

शलिन सशिधरन नायर
प्रशासनिक अधिकारी, जनसंपर्क एवं प्रशासन

"कुछ कलाकार अभिनय नहीं करते, वे जीवन को जीते हैं और फिर हमें जीना सिखा जाते हैं। ओम पुरी उन्हीं में से एक थे।" उनकी आँखों में सच्चाई की चमक थी, आवाज़ में मिट्टी की खुशबू, और व्यक्तित्व में वह अद्भुत आत्मीयता, जो किसी भी दीवार को पिघला दे। ओम पुरी की स्मृति में यह लेख एक विनम्र श्रद्धांजलि है—एक ऐसे कलाकार को, जिसकी यात्रा महज़ सिनेमाई उपलब्धि नहीं, बल्कि मानवीय जिजीविषा और संवेदनशीलता का जीवंत आख्यान है।

अभिनेता ओम पुरी का चेहरा सिर्फ़ एक चेहरा नहीं था। वह एक परिदृश्य था, जिस पर संघर्ष की लकीरें, गरीबी की परछाइयाँ और जीवित रहने की गरिमामयी चुप्पी दर्ज थी। दुनिया के लिए वे वह अभिनेता थे, जिन्होंने भारत की अर्धसत्य से लेकर ब्रिटेन की ईस्ट इज़ ईस्ट तक और हॉलीवुड में जैक निकोलसन व टॉम हैंक्स के साथ स्क्रीन साझा करते हुए अपने अभिनय से गहरी छाप छोड़ी। लेकिन जो लोग उन्हें निकट से जानते थे, उनके लिए ओम पुरी सिर्फ़ एक महान अभिनेता नहीं थे, वे अडिग सादगी से भरे हुए इंसान थे, जो अचानक आपके ऑफिस में आकर हँसी-मज़ाक कर लेते या रात देर से सिर्फ़ यह पूछने के लिए फोन कर देते कि आपने खाना खाया या नहीं।

उनके संघर्ष की कहानियाँ स्वयं किसी फिल्म जैसी लगती हैं। अंबाला में जन्मे ओम ऐसे परिवार में बड़े हुए जिसका सिनेमा से कोई लेना-देना नहीं था। पिता रेलवे में काम करते थे, एक झूठे आरोप में जेल भी गए और परिवार निराशा में डूब गया। महज सात वर्ष की उम्र में ओम ने चाय की दुकान पर काम करना शुरू किया, कप धोना, मेज़ें साफ़ करना और उस दुनिया को देखना जो उम्मीद से खाली थी। आगे चलकर उन्होंने मज़दूरी की, निर्माण स्थलों पर ईंटें ढोईं। लेकिन उनके भीतर पलते सपने उन्हें वहाँ तक ले गए जहाँ तक कोई सोच भी नहीं सकता था।

जब उन्होंने राष्ट्रीय नाट्य विद्यालय (NSD) में प्रवेश लिया, तब तक उन्होंने जीवन में दस ठीक-ठाक फिल्में भी नहीं देखी थीं। अभिनेता नसीरुद्दीन शाह, जो जीवनभर उनके साथी और मित्र रहे, ने न सिर्फ़ उनके साथ एक कमरा साझा किया बल्कि उन्हें सिनेमा की बड़ी दुनिया से भी परिचित कराया। उनका भाईचारा कठिनाइयों से जन्मा और दिल्ली के रिहर्सल हॉल में पनपा। नसीर अक्सर मज़ाक में कहते थे कि ओम का जीवन के प्रति लालच उतना ही था जितना खाने के प्रति।

ओम पुरी की फिल्मों में एंट्री कभी आसान नहीं रही। उन्होंने धीरे-धीरे पहचान बनाई, पहले निर्देशक गोविंद निहलानी की आक्रोश से और फिर अर्धसत्य से, जिसमें ईमानदार लेकिन व्यवस्था से त्रस्त पुलिसवाले की उनकी भूमिका भारतीय सिनेमा के इतिहास की सबसे यादगार प्रस्तुतियों में गिनी जाती है। वे कभी पारंपरिक नायक नहीं रहे। उनका गढ़ा हुआ चेहरा, जिस पर चेचक के दाग थे, अक्सर बाधा माना गया। लेकिन जैसा कि वह स्वयं अपनी साफगोई में कहते थे, *"मेरा चेहरा एक कहानी कहता है, और मैं उस कहानी को हर किरदार में लेकर जाता हूँ।"*

लेकिन ओम पुरी की चमक सिर्फ़ हिंदी सिनेमा तक सीमित नहीं रही। उन्होंने पंजाबी फिल्मों (चन्न परदेसी, लोंग दा लिश्कारा), मराठी फिल्मों (चक्र), बांग्ला फिल्मों (मृणाल सेन जैसे दिग्गजों के साथ), कन्नड़ और मलयालम सिनेमा में भी काम किया। अंग्रेज़ी फिल्मों में भी उनका सफ़र यादगार रहा, सिटी ऑफ़ जॉय से लेकर द रिलक्टेंट फ़ंडामेंटलिस्ट तक। उनकी आवाज़ भी अपनी पहचान थी। पीढ़ियाँ आज भी श्याम बेनेगल की भारत एक खोज में उनके गूंजते नैरेशन को याद करती हैं, जिसने भारतीय इतिहास की गाथा को गंभीरता और गरिमा के साथ प्रस्तुत किया। वहीं बच्चों की पीढ़ी के लिए वे डिज़्नी की जंगल बुक के बघीरा की आवाज़ बने, जहाँ उनकी ऊष्मा और अधिकार सहज रूप से मिल जाते थे।

ओम पुरी को असाधारण बनाने वाली चीज़ केवल उनकी फिल्मोग्राफी नहीं थी, बल्कि उनके भीतर की इंसानियत थी। मुझे इसका प्रत्यक्ष अनुभव चक्रव्यूह (प्रकाश झा की फिल्म) के दौरान हुआ। वहीं से हमारी यात्रा शुरू हुई। उन्होंने मुझे अपनी पहली पत्नी, निर्देशक-लेखिका और निर्माता सीमा कपूर से मिलवाया, और उसके बाद ओम पुरी सर मेरे लिए सिर्फ़ सहकर्मी या इंडस्ट्री का परिचय नहीं रहे, वे परिवार बन गए। प्रमोशन और स्क्रीनिंग के दौरान वह अक्सर मेरे ऑफिस आ जाते, कभी चाय पर बैठने, कभी जीवन पर बातें करने। उन्होंने बिना झिझक अपना नंबर दिया, ईमेल साझा किए, और हमेशा हालचाल पूछने का समय निकाला। उनके फोन औपचारिक नहीं होते थे, उनमें सच्ची चिंता झलकती थी, एक ऐसा अपनापन जो कभी बनावटी नहीं बल्कि गहराई से व्यक्तिगत होता था।

फ़िल्म जगत से बाहर, ओम पुरी विरोधाभासों से भरे हुए इंसान थे। कभी कठोर, कभी अचानक मोहक ईमानदारी से भरे, तो कभी बेहद कोमल। मित्र याद करते हैं कि अंतरराष्ट्रीय निर्देशकों के साथ काम करने के बाद भी वह भारत लौटकर सबसे सरल आनंद लेते, स्ट्रीट फूड, ढाबों की बातें, पुराने दोस्तों के साथ लंबी शामें।

एक कम जानी जाने वाली घटना (NSD) के दिनों की है: उनके पास मंच पर पहनने के लिए जूते नहीं थे। उन्होंने दो साइज बड़े जूते उधार लिए, उन्हें अख़बार से ठूंसकर पूरी रात अभिनय किया। जब बाद में उनसे पूछा गया, तो हँसकर बोले, *"जूते दर्शकों के देखने के लिए होते हैं। दर्द अभिनेता के लिए होता है।"* एक और किस्सा पंजाब की एक क्षेत्रीय फिल्म के दौरान का है, जब पूरी यूनिट एक दूरदराज़ गाँव में फँस गई और खाने का इंतज़ाम नहीं था। ओम ने सितारों की तरह इंतज़ार नहीं किया, बल्कि एक स्थानीय के घर चले गए, उनके साथ दाल पकाई और पूरी यूनिट को खिलाया। ऐसे पल उन्हें सिर्फ़ जनता का अभिनेता नहीं बनाते थे, बल्कि जनता के साथ एक हो जाने वाला इंसान भी बनाते थे।

कुछ निर्देशक उनके लिए सिर्फ़ सहकर्मी नहीं रहे, बल्कि परिवार की तरह थे। प्रकाश झा के साथ उनका रिश्ता कैमरे से कहीं गहरा था। मृत्युदंड की शूटिंग के दौरान वे गेस्टहाउस में आराम करने के बजाय गाँववालों के बीच समय बिताते थे। उनका मानना था कि जब तक वे "शोषण की हवा" नहीं सूंघेंगे, तब तक उसे निभा नहीं सकते। गोविंद निहलानी के साथ आक्रोश और अर्धसत्य सिर्फ़ फिल्में नहीं थीं, बल्कि आत्मा की खोज थीं। श्याम बेनेगल ने हमेशा उनमें एक शिष्य ही नहीं, बल्कि एक सच्चे कलाकार को देखा, चरणदास चोर, आरोहण, कलयुग जैसी फिल्मों में।

ओम पुरी का जीवन एक अद्भुत यात्रा था, संघर्ष से जन्मा, मेहनत से गढ़ा, थिएटर से निखरा और सिनेमा के ज़रिए अमर हुआ। वे भाषाओं की सीमाओं से परे अभिनेता थे, और भावनाओं की सीमाओं से भी। आज जब मैं ओम पुरी जी को याद करता हूँ, तो सिर्फ़ उनकी विशाल स्क्रीन उपस्थिति ही नहीं, बल्कि वे शांत दोपहरें याद आती हैं जब वह अचानक ऑफिस आ जाते थे, या वह स्नेहिल अंदाज़ जब वह पूछते थे कि सब ठीक है न।

उनके निधन की ख़बर ने मुझे भीतर से तोड़ दिया। लगा मानो भारतीय सिनेमा का और मेरे अपने जीवन का एक अध्याय हमेशा के लिए बंद हो गया। वे सिर्फ़ एक दिग्गज नहीं थे जिन्हें हम दूर से देखते थे, बल्कि वे ऐसे इंसान थे जिन्होंने आपके जीवन में जगह बनाई और आपको देखने, समझने का एहसास दिलाया। जैसा कि अभिनेता नसीरुद्दीन शाह ने कहा था, *"ओम पुरी की आँखों में सच्चाई बसती थी। वही उनका सबसे बड़ा तोहफ़ा था।"* और जिसने भी उनकी आँखों में कभी देखा हो, चाहे सिनेमा हॉल के अँधेरे से या किसी दफ्तर की शांत मेज़ के उस पार, वह जानता है कि यह कितना सच है।

शायद यही ओम पुरी का सबसे बड़ा उपहार था: सिर्फ़ सिनेमा से नहीं, बल्कि जीवन से जुड़ना। उन लोगों से जुड़ना जिन्होंने उन्हें अपनी कहानियाँ सौंप दीं। वे आम आदमी के संघर्ष अपने चेहरे पर ढोते थे और फिर भी एक छोटी-सी मुस्कान में हमें उम्मीद की झलक दिखा देते थे। जो लोग उन्हें जानते थे, उनके लिए ओम पुरी सिर्फ़ एक विलक्षण अभिनेता नहीं थे। वे परिवार थे। बड़े भाई थे, जो हमेशा आपका ध्यान रखते। दोस्त थे, जो आपको कभी अकेला नहीं छोड़ते। वे ऊष्मा थे, जो खामोशी को भी जीवंत बना देते थे।

वे मुझे कभी मना नहीं कर पाए, और मैं उन्हें कभी मना नहीं कर पाया। हमारा रिश्ता उतना ही सरल था जितना गहरा, अनकहा और शाश्वत। और आज भले ही वह इंसान, वह दिग्गज हमारे बीच न हों, उनकी कहानी और उनका अनुपम काम हमारे साथ है। उनकी हँसी, उनकी खामोशियाँ और उनकी आँखें, वो आँखें जो जीवन का बोझ भी उठाए हुए थीं और प्रेम की कोमलता भी, कभी हमें छोड़कर नहीं जाएँगी। ओम पुरी हमारे थे, और हमारी स्मृतियों में हमेशा रहेंगे।

बचपन की वो गलियाँ

डॉ रश्मि रंजन परिदा
सह-प्राध्यापक

बचपन की वो गलियाँ, वो मिट्टी का खेल,
ना कोई चिंता, ना सपनों का मेल।
छोटे से दिल में बड़ी सी खुशी,
हर चीज़ में ढूँढते थे नई दुनिया नई ख़ुशी।

कंचों की चमक, वो पतंगों की उड़ान,
दोपहर की नींदें, और शामों का जान।
माँ की कहानी, दादी का प्यार,
एक चुटकी बात में मिटता था हर विकार।

वो बारिश में नाचना, कागज़ की नाव,
भीगते तन में भी होता था बहाव।
न किताबों का बोझ, न वक़्त की मार,
हर दिन लगता था जैसे त्यौहार।

ना दिखावा, ना लालच, ना झूठ की चाल,
हर दोस्त था सच्चा, हर रिश्ता बेहाल।
अब जब बड़ा हुआ, तो समझ आया यही,
सबसे हसीन तो बचपन की थी हर कहीं।

काश लौट जाएँ वो बेफ़िक्र दिन,
जहाँ हर मोड़ पर बस मुस्कानें थीं छिन।
बचपन, तू ही था असली जादू,
तेरे बिना अब सब कुछ है बस आधा-साधू।

भारतीय प्रबंधन संस्थान जम्मू– भारत का गौरव, जम्मू की पहचान

शलिन सशिधरन नायर
प्रशासनिक अधिकारी, जनसंपर्क एवं प्रशासन

नदी-नालों से घिरा, त्रिकुटा पर्वत का मान,
भारतीय प्रबंधन संस्थान, प्रबंधन की पहचान।
भारत का गौरव, भारत की शान,
भविष्य सँवारे, दे सपनों को उड़ान।

जय हो, जय हो, संस्थान महान,
प्रबंधन और उद्यमिता का पावन स्थान।
ज्ञान जहाँ बनता है जीवन का प्रकाश,
यहीं से शुरू होता उत्कृष्ट प्रयास।

नालंदा लाइब्रेरी, दीपक जगाए,
हर जिज्ञासा को राह दिखाए।
मंडपम की गूँज है विचारों का सार,
भविष्य गढ़ने का दृढ़ आधार।

रंगमंच जहाँ कला खिल जाए,
संस्कृति नभ तक उड़ानें पाए।
ब्रह्मपुत्र अतिथि गृह अपनापन लुटाए,
मेहमानों को दिल में बसाए।

अन्नपूर्णा में है स्वाद का निवास,
मित्रता और स्नेह का मिलन-प्रकाश।
व्यापारण में जीवन की धड़कन बसी,
सुविधाओं की दुनिया यहीं सजी।
तेजस में गूँजे उमंग की तान,
युवा मन रचते हैं जीत का गान।
कैलाश है नेतृत्व की पावन पहचान,
जहाँ दृष्टि बने प्रेरणा महान।

अनन्दम् सिखाता है सुख का सार,
जीवन का देता है पावन उपहार।
उद्यमिता, नवाचार एवं कौशल विकास केंद्र,
नव-प्रेरणा जगाए, रचे नया इतिहास।

लघु व्यवसाय का बढ़े उत्थान,
विविधता, समावेशन का मिले समान सम्मान।
नवाचार एवं सुशासन परिवर्तन केंद्र प्रखर,
राष्ट्र निर्माण को दे पथ उज्ज्वल-अमर।

जय हो, जय हो, संस्थान महान,
भविष्य सँवारे, बने भारत की जान।
ज्ञान, प्रबंधन, उद्यमिता का संगम,
यहीं है भारतीय प्रबंधन संस्थान जम्मू का उज्ज्वल आलम।

कर्तव्य पथ पर

ई० मो० हसीन
कनिष्ठ अभियंता (सिविल), परियोजना विभाग

निष्ठा से बंधे हाथ, ईमानदारी की राह
संस्थान के प्रति समर्पण, दिल से की गई चाह

हर सुबह नई ऊर्जा, नए उत्साह के साथ
कर्तव्य पथ पर चलते, न थकते न होते हम हताश

सत्य और न्याय के मार्ग पर, निरंतर बढ़ते कदम
संस्थान की प्रगति में, अपना योगदान देते हम

निजी स्वार्थों को त्याग, सेवा भाव से काम
संस्थान के लिए समर्पित, हर पल हर गाम

ईमानदारी और निष्ठा, जीवन का है मूल
संस्थान के प्रति समर्पण, मेरी पहचान का फूल

एक छोटी सी कहानी

आशीष कुमार
पीएचडी डब्ल्यूपी 25003

फिर से शायद वही दौर है, हाँ वही तो है। अब लगता है इसकी आदत डालनी पड़ेगी, पता नहीं ये ग़म है कि जाता ही नहीं।

एक दोस्त "स्वाभिमान" का साथ क्या छूटा, सब अधूरा लगता है।

ये खुशियाँ कितनी छोटी होती हैं न, कभी टिकती ही नहीं, और एक ये ग़म है कि जाता ही नहीं।

आइए, एक कहानी सुनते हैं जिससे एहसास होगा कि अपने तो अपने ही होते हैं, बाकी सब पराए होते हैं।

अभी-अभी तो एहसास हुआ था कि मैं खुश हूँ। अचानक किसी ने दरवाज़े पर ज़ोर से खटखटाया।

मैंने सोचा "इज़्ज़त" आयी होगी — बहुत दिन हो गए उसे देखे। मगर नहीं, ये तो "लालच" आया था। कितना ख़ूबसूरत है ये, सभी ने कहा।

"लालच" भी इसी बात से खूब इठला रहा था। तभी एक सज्जन तपाक से बोले — "लालच और इज़्ज़त काफी अच्छे दोस्त हैं।"

बस फिर क्या था, मैं भी शुमार हो गया लालच को खुश करने में। पता ही नहीं चला कि कितनी दूर आ गया था मैं।

तब तक मेरी दोस्ती "डर" से भी हो गई। इसने तो ऐसा क़ब्ज़ा किया कि अब कैसे इससे पीछा छुड़ाऊँ, समझ नहीं आता।

इन सभी दोस्तों ने खूब धकेला मुझे, और हम जहाँ जाते एक साथ ही जाते थे।

फिर एक दिन यूँ ही स्वाभिमान सामने से आता दिखा।

वो भी कितना अच्छा दिखता है न! पास खड़े लोगों ने फुसफुसाते हुए कहा — सच में, उसके माथे पर तेज़ और चेहरे की कांति देखते बनती थी।

एक समय था, वो मेरा बहुत अच्छा मित्र था।

मगर ये "डर" आया और बोला — चलो, चलते हैं।

"इज़्ज़त" से नहीं मिलना है क्या? "लालच" झुंझलाते हुए बोला।

स्वाभिमान मुस्कुरा रहा था, और सोच रहा था — कितने अच्छे दिन थे जब उसके कहने पर किसी से भी लड़ जाता था मैं।

एक बार तो ये "डर" बहुत पीटा था मुझसे।

और आज देखो, यही "डर" है जो मेरा साथ छोड़ता ही नहीं — और मैं उसका।

आगे बढ़ते हुए स्वाभिमान ने मेरे कंधे पर हाथ रखा और मुझे पुराने दिन याद दिलाने की कोशिश की,

जब हमारी दोस्ती की मिसाल दी जाती थी।

उसने कहा कि मैं डर और लालच का साथ छोड़ दूँ।

शायद मैं उसे कह पाता — "हाँ, मैं तेरे साथ चलूँगा।"

मगर तभी लालच और डर, दोनों ने मेरे दोनों हाथ थाम लिए।

खींचने लगे मुझे और याद दिलाया कि इस स्वाभिमान ने दिलाया क्या है तुझे, तकलीफ़ के अलावा।

मैं भी एक पल रुका, और फिर बढ़ दिया कदम अपने मजबूरी के दोस्तों "डर" और "लालच" के साथ।

स्वाभिमान अकेला खड़ा देखता रहा मुझे।

उसके चेहरे की कांति कम-सी पड़ गई थी।

वो दुखी था।

शायद यही दस्तूर है — हम अपने सबसे करीबी लोगों को उनके हाल पर छोड़ देते हैं।

मुझे आज भी बहुत याद आती है उसकी।

काश, एक दिन हम फिर से अपनी दोस्ती की मिसाल को ज़िंदा कर सकें।

इन सभी उथल-पुथल में एक दिन मेरी मुलाक़ात "इज़्ज़त" से भी हुई।

मैं बहुत खुश हुआ कि आखिरकार तुम मुझे मिल गई।

मैं बिना समय गँवाए उसकी ओर बढ़ा।

मगर ऐसा लग रहा था कि वो मुझसे मिलना नहीं चाहती थी।

उसे मेरे और स्वाभिमान की दोस्ती के बारे में पता था।

उसने कहा — "अकेले आए हो? वो कहाँ है?"

मैं कुछ ना कह पाया।

और फिर वो भी मुँह फेरकर चली गई।

आज भी बहुत ढूँढता हूँ अपने प्यारे स्वाभिमान को,

मगर पता नहीं कहाँ चला गया वो।

माँ

मानसी गुप्ता
एमबीए 24147

जिसने लिखा है हमें, बस उसे लिखने की एक कोशिश है,
ये एक कविता माँ के नाम घोषित है।
आज भी मैं ये समझ नहीं पाता हूँ,
कि उसकी रूह में उससे ज़्यादा मैं क्यों बसता हूँ?
दर्द में मेरे, मुझसे ज़्यादा आँसू वो बहाती है,
और खुद के हर कष्ट, वो मुस्कान से क्यों छुपाती है?
परिवार के लिए अपने हर शौक वो कुर्बान कर देती है,
सबकी देखभाल करना ही वो अपनी आदत क्यों बना लेती है?
ये समाज हर वक्त उससे बस कुछ देने की ही उम्मीद क्यों रखता है?
थोड़ा खुद के लिए सोच लेने से उसकी ममता पर सवाल क्यों उठता है?
ना कोई शोहरत की, ना दौलत की उसे दरकार है,
बस करे कोई थोड़ी इज्जत उसकी, उसी का ही इंतज़ार है।
कभी खुद बोलेगी नहीं वो, पर गुज़ारिश आज मेरी हर घर की सरकार से है,
कि सम्मान उनको भी मिले उतना, जिनकी बेशक वो हक़दार से है।
जिनकी बेशक वो हक़दार से है।

वह नीला कागज

अंकुश अग्रवाल
ईएमबीए छात्र 25006

गाँव के उस छोर पर एक छोटी-सी झोंपड़ी थी, जिसमें एक बूढ़ा आदमी रहता था — नाम था नन्दू काका।

चेहरे पर गहरी झुर्रियाँ, सफेद बिखरे बाल, और आंखों में अनगिनत कहानियाँ। वह हर दिन गाँव की गलियों में चुपचाप घूमता रहता, हाथ में एक पुरानी पोटली और एक नीला कागज लिए।

गाँव के बच्चे अक्सर काका से पूछते, "काका, ये नीला कागज हर जगह साथ क्यों रखते हो?"

काका मुस्कुरा देते, कभी कुछ कहते नहीं। बस, उस कागज को अपनी छाती से लगा लेते।

एक दिन बारिश तेज़ हो गई। गाँव के लोग अपने घरों में सिमट गए। पर नन्दू काका वही नीला कागज लिए, गाँव के पीपल के नीचे बैठे रहे।

तभी, छोटा बबलू दौड़ता आया, "काका, घर चलो! भीग जाओगे।"

नन्दू काका ने पहली बार बबलू को पास बुलाया और वह नीला कागज उसकी हथेली पर रख दिया।

बबलू ने ध्यान से देखा। उस कागज पर बच्चों की टूटी-फूटी लिखावट में लिखा था— "नन्दू काका सबसे अच्छे हैं। वे हमें कहानियाँ, पतंग और जिंदगी सिखाते हैं ।"

बबलू की आंखें चमक उठीं। "तो काका, यही आपकी खुशियों का राज़ है?"

काका हँस पड़े, "बेटा, असली दौलत तो प्यार और यादों में छुपी होती है। यही कागज मेरा खजाना है।"

उस दिन गाँव ने जाना—नीला कागज महज़ एक कागज नहीं, बल्कि यादों और अपनापन का प्रतीक था, जिसकी कीमत न पैसों से, न चीज़ों से आंकी जा सकती थी।

नैतिक शिक्षा: जीवन की असली संपत्ति हमारे काम, प्रेम और यादों में छिपी होती है, जिन्हें हम अपने आसपास के लोगों को दे सकते हैं।

बेज़ुबान

सुमिता प्रधान
आईपीएम 24123

बाग़ में एक धूप थी, नर्म सी, लेकिन रौशनी से भरपूर। वो फूलों को ज़िंदा करता, तितलियों को रंग देता, और अपने होने से दुनिया में एक नया सवेरा भर देता।

उसके आस-पास एक हवा थी, जो हमेशा उसके साथ रहती। कभी उसके चेहरे से टकराती, कभी उसकी रौशनी में छुप जाती। पर कभी अपनी बात नहीं कह पाई।

उस दिन खेल चला और सबने हवा को घेर लिया। धूप ने अपनी बेपरवाही से एक सवाल पूछा, "सुना है तुम्हारे दिल में कोई छुपा है? बताओगी मुझे?"

हवा ने अपनी आँखों में सब कुछ छुपाकर कहा, "वो कोई ऐसा है जो सबको चमक देता है, लेकिन कभी उन झोंकों को नहीं महसूस करता, जो उसके आस-पास सांस लेते हैं। मैं हर सुबह उसके साथ रहती हूँ, पर उसकी नज़र में सिर्फ एक झोंका हूँ... जो आता है, छूकर चला जाता है।"

धूप हँस दिया, "तुमने उससे वैसे ही बोल दिया होगा, अरे बंदा डर गया होगा सुन के! क्या पता उसने समझा हो तुम मज़ाक कर रही थी।"

और उसके बाद हवा उड़ गई, अपनी झोंकों के साथ, अपनी ख़ामोशी लेकर। धूप पीछे से चिल्लाता रहा, "नाम तो बता जा! कौन है वो, मैं सुनना चाहता हूँ!"

लेकिन हवा उड़ चुकी थी। और धूप अब भी वहीं खड़ा था, अपनी रौशनी में।

"क्या ये मोहब्बत अब भी प्रकृति की कहानी है? या ये कहानी अब इंसानों के बेकार गुमानों की एक पहचानी सी अधूरी दास्तान बन चुकी है?"

मेरा मौन गुरु

पर्युल भावसार
आईपीएम 24083

आईआईएम जम्मू के इस सफर में हर दिन मेरे हॉस्टल (गंगा) के कमरे की खिड़की से बाहर दिखने वाला वो पहाड़ मेरा शिक्षक बन गया है।

खड़ा कितनी ही बाहें आई, तूफ़ान चले, पर कोई भी उसे गिरा नहीं सका। को अडिग खड़ा रहा।

लेकिन एक दिन, एक उच्छ उसके सामने उसका एका जीवन माँग लिया।

उसने बिना सवाल उठाए अपना जीवन समर्पित किया।

उसने अपनी चट्टानें खो दीं। अपनी ऊँचाई का त्याग किया,

ताकि हम छात्रों के लिए, जिन्होने अपने उज्जवल भविष्य के लिए यहाँ दाखिला लिया,

उनके लिए कक्षाएँ बन सके, रास्तें खड़े किए जा सकें।

हम हमारे सपनों तक पहुँच सकें ।

आज जब भी मैं कक्षा या छात्रावास से गुज़रते इन पहाड़ों को देखती हूँ, मुझे इनमें त्याग, धैर्य, और नेतृत्व का प्रतीक नजर आता है।

शायद आने वाले सालों में जब हम ऊँचे पदों पर होंगे,

हममें से कोई सीईओ बनेगा, तो लोग हमारी मेहनत और काबिलियत की बातें करेंगे।

पर मैं जानती हूँ हमारी हर सफलता में यह प्रकृति का हिस्सा भी शामिल हैं,

क्योंकि उसने अपनी जान देकर हमारे सपनों को रास्ता दिया हैं।

हर सुबह मुझे यह याद दिलाता है कि सच्चा नेतृत्व वहीं है,

जो अपना सब कुछ देकर दूसरों का भविष्य सँवार दे।

यह तुम्हारी बाज़ी है!

अभिषेक गौरव
एम.बी.ए. (हेल्थकेयर मैनेजमेंट) 25002

इसमें हार, जीत, मुकम्मल कोशिश, सब तुम्हारी है! तुम्हारी इस राह में, चाहने वाले, तुमसे बैर रखने वाले, तुम्हे समझाने वाले, तुम्हे समझने वाले, तुमसे ईर्ष्या करने वाले, सब लोग होंगे।

तुम्हे लगेगा इनमें से कोई तो सही साबित होगा, कोई तो होगा जिसकी कही बातें तुम्हे किसी और की कही बातो से ज्यादा वाजिब लगेगी। तुम किसी की मत सुन ना!

क्योंकि कर्तव्य पथ पर सवार तुम सिर्फ और सिर्फ तुम्हारे किए से मंजिल पाओगे। वो मंजिल जिसको हासिल करना शायद जीवन का मकसद है ही नहीं!

तुम होगे वो राही जिसकी डगर सब से अलग होगी: जाबाजों की गिनती में उन्हें नहीं गिना जाएगा जिन्होंने कहा कि तुम नहीं कर पाओगे, ना ही उन्हें गिना जाएगा जिन्होंने कहा कि तुम्हे कुछ अलग करना चाहिए था, और ना ही उन्हें गिना जाएगा जिन्हें तुम्हारे अंदर पनपती ज्वाला महज़ एक अंगार लगती है!

गिना जाएगा तो सिर्फ तुम्हे। क्योंकि जिंदगी की गर्म थपेड़ों से सिर्फ तुम्हारे चेहरे पर संध होगी। सिर्फ तुम्हारे पसीने में लिपटी तुम्हारी कमीज़ तुम्हारे बदन पर महफ़ूज़ होगी। सिर्फ, और सिर्फ तुम्हारे मन में सब कुछ छोड़ देने और त्यागने की भावना से ठीक विपरीत, उस से लड़ कर अपनी बेड़ियों को पराजित करने की तलब होगी।

उस तलब, उस प्यास, उस ज्वाला, उस जज्बे की गिनती होगी। तुम अपनी हर हार से उतने ही परिचित होगे जितनी उस अंततः मिली जीत से। वो प्रत्येक शिकस्त, वो सारी कश्मकश, वो रातें जिसमें नींद कम खामोशी ज़्यादा थी, वो लम्हे जब तुमने थाम लेने के बारे में सोचा, पर थमे नहीं। इससे दूर मत भागो, इसे स्वीकारो! यह तुम्हारा परिचय है।

तो बेपरवाह अपनी राह पर, अपने संघर्षों से इल्तेजा करते हुए, चलते रहो। क्योंकि जाबाजों की गिनती में शामिल होना शायद तुम्हे मंजिल की ओर का रास्ता बताएगा, लेकिन जाबाजों की तरह लड़ना ही, तुम्हे मंजिल के करीब पहुंचाएगा!

अपने सारे बांध तोड़ो, सामान्यता की वो लकीर लांघो

नए - पुराने, जिन्हें तुम मानते हो, उन अपनों के लिए; अपने बचपन, और उस बचपन के, सपनों के लिए!

कोई क्यों खुद से इतना हार जाता है। कोई क्यों सब्र नही रख पाता है।

मरना क्या जीत का एलान है। मरना क्या सब्र का प्रमाण है।

एक जिन्दगी से जिन्दगी की आश है। क्या जितना ही वक्त का प्रवास है।

कैसे लिखूँ वो बात, जो असंख्य यादों से बनी। कैसे करूँ तेरी बात, जब तू साथ ही नहीं।

तू जिन्दगी से जीत कर यूँ जा रहा है, क्या। या इस जहान को तन्हा बता रहा है, क्या।

हम सब की एक जिन्दगी से आश होती है। जब तक हमारे फेफड़े मे साँस होती है। तू साँस को यूँ छोड़ गया, और आश को क्यूँ तोड़ गया।

उस तिरंगे की हिफाजत तुम्हारे जीवन का बहुमूल्य लक्ष्य

ऋषिका अनुराग अग्रवाल
एम.बी.ए. 25024

पिछले फागुन में तो तुमने मुझे पसंद किया था

अपने जीवन में प्रवेश का द्वार खोल दिया था

हृदय में तो मुझे बाकी था स्थान पाना

क्योंकि वह स्थान तिरंगे ने घेर रखा था

वह दिन भी आया

जब माथे की बिंदी, मांग का सिंदूर मुस्कुराया

मेरी हरी चूड़ियों की खनक से शर्म से लाल हो गई

अभी मेहंदी का रंग भी नहीं उतरा था

तुम्हें, मैंने पूरा महसूस भी नहीं किया था

कि सरहद से तुम्हारा पहला प्यार तुम्हें पुकार रहा था

उस पूरी रात मेरा दिल डूब, उतर रहा था

सूर्य देवता के आसमान में दस्तक देने से पहले तुम जाग गए थे

नींद से ही नहीं, दिल की दस्तक से हौले यू रात के सुहाने सपनों का सुबह होते टूट जाना

तुम्हारा मेरे सीने में यू धड़कनों स आना, अचानक जाना

बाद में महसूस हुआ, तुम्हारी सांसे जो मेरे दिल में धड़क रही है

एक नायाब आस मुझ में पल रही

खुशी से मेरा तन मन हरा भरा हो गया

सलाई पर नन्ही जुराबो का फंदा पूरा हो गया,

इस खुशी को मैं अपने दामन में समेट भी नहीं पा रही हूं

तुम्हारे अस्तित्व का अंश जो अब तुम्हारे स्पर्श और साथ का एहसास करा रहा है

तुम अपना पहला प्यार सिद्धत से निभाना

और मैं अपना

तुम्हारे रास्ते में नैन बिछाए वह नन्ना परिंदा जो तुम्हारी बाहों में आंखें खोलना चाहता..........

दास्तान-ए-IIM

अभिनव पांडे
एचएएचएम 24003

पहाड़ों की चादर, तवी की रवानी उसी के किनारे बसी इक कहानी, 13 जुलाई की वो सुबह सुहानी IIM की बगिया में पहली रवानी, बैग लिए आए हम दूर-दराज से नया था सफर, नए थे अंदाज़ से, तवी से जगती, वो पहला सफर उम्मीद से भरे हम, नज़र में हुनर, अजनबी रास्ते, अजनबी मंज़र मगर दिल में था इक निखरता हुनर, ओरिएंटेशन की भागदौड़ भारी हर चेहरा अनजाना, हर बात थी प्यारी, सवालों की बारिश, जवाबों की प्यास MBA की राहें, न आसान थीं ख़ास, क्लास की घंटी, केस स्टडी का शोर Assignments ने मचाया मन में जोर, सुबह के 7 बजे आँख खुली कॉफ़ी नहीं, केस स्टडी की फाइल मिली, नींद से बोला मैं, "मुझे और सोने दो तभी टाइम टेबल बोला, "मत जाओ क्लास, ग्रेड ड्रॉप होने दो।" क्लास में बैठे आँखों में नींद प्रोफेसर बोले, "किसका आया ड्रीम?

Committee और Clubs के दरवाजे खोले गए Eol Form भरें, इरादे तमाम अब टटोले गए, IIC ने बुलाया HRS का हुजूम सुनाई गई ज्ञान की बातें, गूंजा हर रूम, फ्रेशर्स पार्टी ने रंगों की सौगात दी नई दोस्ती को पहली मुस्कान दी, स्वतंत्रता दिवस की सुबह आई गर्व लेकर झंडा ऊँचा हुआ, भारत माँ के नाम से बढ़कर, जन्माष्टमी में मटकी फूटी, गीत बजे भक्ति में MBA की थकान भी सजे, प्रोजेक्ट्स, असाइनमेंट्स, PPTs की रफ्तार नींद कम, काम ज्यादा-फिर भी सब तैयार, प्रोफेसर को रात के तीन बजे भेजा मेल साथ में "Dear Sir, sorry for the delay" वाली Trail, आंखों में डार्क सर्कल, हाथ में कैफीन क्लास और कैरियर, दोनों का यही है सीन, प्लेसमेंट का मौसम जब आया हर दिल ने अपना रिज्यूमे दुबारा लिखवाया, हिंदी पखवाड़े में कविता और जोश अपनी भाषा में दिखाया दमखम और होश, पहले सेमेस्टर के एग्ज़ाम्स ने ली परीक्षा पढ़ाई और टेंशन की थी अजीब मिक्स रचना, दिवाली आई रोशनी बनकर Hostei में जल उठे दिए हर एक घर, 'युवा संगम' ने पहुँचाया चेन्नई की ओर संस्कृति और संवाद का अनोखा दौर, फिर से किताबें, दूसरी सेम की चाल

हर दिन बना एक नई रणनीति का हाल,

Student Council Elections की आई बारी कई ने दिखायी Leadership की सवारी, गणतंत्र दिवस ने जोश से भर दिया मन देशभक्ति की भावना ने बाँध लिया तन, "Empyrean" का उत्सव आया रंग लाया Cultural nights ने सभी को झुमाया, होली में उड़े रंग, हँसी की बौछार पढ़ाई से पहले दिलों का था त्यौहार, Final Exams ने फिर घेरा घेरा Revision और Notes का चला बसेरा, आखिरकार पूरा हुआ साल का आखिरी दिन "Done with Year One" मिला संतोष और बिन, इंटरव्यू में पैनल पूछे, "Why should we hire this one हम बोले, "Sir, because we survived Year 1!" तो IM जम्मू का जीवन है खास जहाँ हर दिन होता है full-toss, हँसी में छुपा है थोड़ा दर्द MBA नहीं, ये है एक अलग ही वर्ल्ड!

तिरंगे की सौगंध

शिवम सोनी
एम.बी.ए. (हेल्थकेयर मैनेजमेंट) 25075

माटी की खुशबू में बसी है,
शौर्य कहानी वीरों की,
हर सांस में आज भी महकती,
कुर्बानी उन धीरों की।

आज़ादी का ये पावन पर्व,
लाया है फिर वो याद पुरानी,
जब सरफ़रोश बन झूले थे,
फांसी के फंदे वीर जवानी।

आओ मिलकर गाएं गीत,
भारत मां के जयगान के,
हर कोना, हर दिल बोले,
हम संतान हैं बलिदान के।
तिरंगे की लहराती शान,
सूरज-सा जग में दमक रही,
इसके नीचे जन्म है गौरव,
इसके आगे जान भी निछावर।

न बोले धर्म, न बोले जात,
बस एक धड़कन—भारत की बात,
अमर रहे ये प्यारा देश,
हर जन मन में, हर दिन साथ।

चलो बढ़ाएं हम वो क़दम,
जो सत्य और साहस की ओर,
ताकि आने वाले सपने बदलें,
एक सुनहरे भारत कीओर।

जय हिंद!

मैं गुरु हूँ

शाश्वत त्रिपाठी
एम.बी.ए. 25246

मैं गुरु हूँ,
ज्ञाता हूँ परंब्रह्म का,
परंतु विनम्र आभा में बसता हूँ;
स्वार्थ का परित्याग किये, x 2
परम- साधना की कांति में सजता हूँ।

मैं गुरु हूँ,
गोताखोर हूँ प्रज्ञा- सागर का,
मात्र शिष्य आरोह की सीपियाँ ढूंढता हूँ;
मेरा तेज देख, शीतल पड़ता रवि, x 2
राजन भिक्षुक कर देता हूँ।

मैं गुरु हूँ,
ईश्वर की विस्मित रचना में,
शिष्य मुझे कुछ यूँ निराला है;
द्रोण- पुत्र का स्मरण नहीं संसार को,x2
मुझे कौन्तेय के नाम से जाना है।

मैं गुरु हूँ,
व्यक्ति सीमित मैं नहीं,
मैं निर्गुण विचार हूँ;
जिसने मृत्यु में धारण किया, x2
उस दशानन का श्रृंगार हूँ।

मैं त्रुटि भी हूँ,
मैं क्षति भी हूँ,
मैं आघात भी हूँ,
मैं इतिहास भी हूँ,
यदि वास्तव में अनुसृत करो,
तो नवनिर्माण का शिलान्यास भी हूँ।

मैं गुरु हूँ...

नई सुबह की तलाश

अभिषेक कुमार
एमबीएएचसी 25003

हर अंधियारे में एक उजाला है,
हर मुश्किल में एक हवाला है।
जो ठान लिया दिल ने अगर,
तो हर मंज़िल पे हमारा हक़ है।

राहें भले हों ऊबड़-खाबड़,
हौसलों के पंख मजबूत हैं।
सपनों की वो सुनहरी किरन,
हमारी आँखों में आज भी मौजूद हैं।

चलो उठें, नए सवेरे का गीत गाएँ,
खुद को फिर से हम आज़माएँ।
हर गिरावट में छुपी है उड़ान,
हर हार में छुपी है पहचान।

त्रिकुट पर विराजी महाशक्ति - श्री माता वैष्णो देवी

डॉ. आशीष ईशर
कार्यकारी (प्रशासन)

लाख मुसीबत आये दुनिया पर, वो रक्षा हमारी करती है,
परम कृपालु, परम दयालु, वो माता जग जन्नी है।
पहाड़ों में विराजे, वो कर रही तपस्या,
पर फिर भी सुनती है, अपने भक्तों की हर समस्या।
क्या माँगे, क्या बोले उसको, वो सबके मन की जानती है,
अष्टभुजा बैठी वो सिंह पर, शान-सी लगती है।
कथा सुनाते हैं लोग कि कैसे भैरव से युद्ध लड़ा था,
धर्म की रक्षा करते-करते त्रिकुट पर्वत को घर बनाया था।
भक्त श्रीधर की पुकार पे जब भंडारा रचाया,
तभी तो जग में “माँ वैष्णो” नाम महान कहलाया।
समझ तो गये होंगे आप सब, मैं कर रहा हूँ बात उस माता रानी की,
करती है बैठ जो भवन में रक्षा दुनिया की।
भक्तों की आस्था का दीपक जलता है उसकी गुफा में,
सच्चे मन से पुकारो उसको, वो प्रकट होती है हर दुआ में।
त्रिकुट पर्वत पर बसी, है वो महाशक्ति हमारी,
माँ वैष्णो रानी की जय-जयकार करे ये दुनिया सारी।
जय माता दी!

जीवनधारा: जल की महिमा

श्री विजय अनंत कांबले
प्रशासनिक अधिकारी परियोजना और संपदा

पहाड़ों की चोटी से फिसलता,
पिघलती बर्फ का रूप बदलता।
झरनों की फुहार में, नदी की धार में, हर दिशा में जल ही जल उगलता।
धरती की प्यास बुझाता है, हरितिमा को जीवन दे जाता है।
खेतों में हरियाली लाता, हर फसल को संजीवनी पिलाता।
सागर की लहरों में उमंग है, झीलों की शांति में संग है।
बूँद-बूँद में अनगिनत सपने, हर जीव की आँखों के अपने।
पक्षी, पशु, मानव सबका साथी, जल के बिना सब अधूरा है बाकी।
प्यासा गला, सूखी धरती की पुकार, जल है जीवन, यही है सच्चा उपहार।
बारिश की बूँदें जब गिरती हैं, धरती की गोद हरी होती है।
सूखे तालाबों में उम्मीदें जगतीं, किसान की आँखों में खुशी चमकती।
जल की हर बूँद में त्योहारों का रंग, और हर दिन में जीवन की सुंदरता छिपी है।
पर आज जल संकट की बेला है, इसका संरक्षण सभी का मेला है।
आओ मिलकर प्रतिज्ञा करें, हर बूँद को सहेजना सीखें।
जल बचाओ, जीवन बचाओ, इस अमूल्य धरोहर को आगे बढ़ाओ।

दर्पण

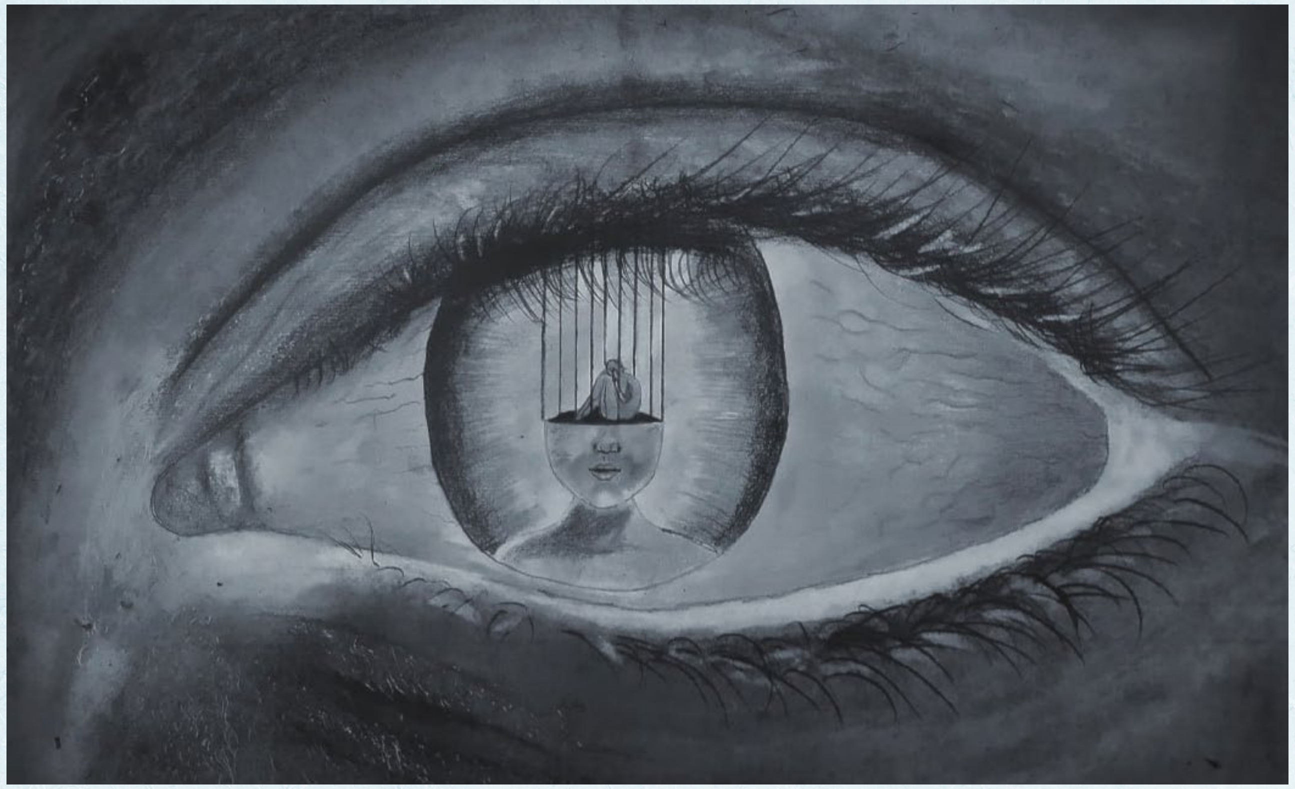

अविनाश गोंडवार, एम.बी.ए. 25057

प्रो. नितिन उपाध्याय, शैक्षणिक डीन

प्रो. प्रशांत मिश्रा, प्रोफेसर ऑफ प्रैक्टिस

डॉ. चिन्मय स्वैन, सहायक प्राध्यापक

संस्थान में आयोजित कार्यक्रमों की झलक

10वें वर्ष समारोह का उद्घाटन

बंधन कार्यक्रम (स्थानीय परिवारों के साथ सांस्कृतिक विसर्जन)

79वें स्वतंत्रता दिवस समारोह

ऑपरेशन सिंदूर

INDIAN INSTITUTE OF MANAGEMENT
राष्ट्र प्रथम

20 मई 2025
राष्ट्र प्रथम
Nation First

राष्ट्र प्रथम

भारतीय प्रबंधन संस्थान जम्मू
Indian Institute of Management Jammu

जगती, जम्मू-181221, भारत
Jagti, Jammu-181221, India
ई-मेल: | E-mail: hindipatrika@iimj.ac.in
फ़ोन नंबर: | Phone No.: 0191-2741400

IIM JAMMU
सा विद्या या विमुक्तये

cygnusadvertising.in